राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 116
ध्रुव-शक्ति
एक पोस्टर मुफ्त
शक्ति वर्ष
1998
Vinod Yadav

कहते हैं, ऐसा मानते भी हैं, और अक्सर देखा भी गया है कि सच और झूठ, पुण्य और पाप या धर्म और अधर्म के बीच जब-जब टकराव हुआ है तब-तब सच, पुण्य और धर्म की ही विजय हुई है—
लेकिन जिस लड़ाई में दोनों तरफ सत्य ही मौजूद हो, उस लड़ाई का नतीजा क्या निकलेगा?
तुम नताशा की मदद करके भारी भूल कर रही हो शक्ति! तुम न्याय करने के चक्कर में गलत इन्सान पर अपनी शक्तियों का प्रयोग कर रही हो!
शक्ति, नारी की रक्षक और नारी के सम्मान की संरक्षक है! और नारी पर हाथ उठाने की जुर्रत करने वाला कभी सत्य और धर्म का पक्षधर नहीं हो सकता!... तुझे शक्ति का दंड तो भुगतना ही होगा!
दोनों प्रतीक हैं सत्य के! दोनों प्रतीक हैं न्याय के! और दोनों को एक ही चीज पसन्द है... विजय! इसीलिए आज एक दूसरे के आमने-सामने खड़े हैं...
ध्रुव-शक्ति
कथा: जॉली सिन्हा
चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल, विनोद, डीपावार
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

बंधी मुट्ठी लाख की, और खुली तो फिर खाक की! धरती की खुली मुट्ठी को इन्सान घूस-घूसकर खाक में तब्दील करता जा रहा है! लेकिन समुद्र की बन्द मुट्ठी में लाख नहीं, करोड़ नहीं, अरब नहीं, बल्कि खरबों की दौलत छिपी हुई है। समुद्र के अन्दर पनपते मोती और मूंगों के अलावा सदियों से लगातार डूबते जहाजों में बेशुमार दौलत और पुरातत्व संबंधी बेशुमार खजाने भी इसकी लहरों के परदे में छिपे हुए हैं। इस दौलत को निकालने में न तो कोई खतरा है, और न ही जोखिम-
या... या शायद होता है-
हमारा इस 18वीं सदी में राजनगर के तट के पास डूबे इस पुर्तगाली जहाज को ढूंढने और इसके खजाने को निकालने का काम तो काफी योजनाबद्ध था! फिर इन कोस्ट गॉर्ड्स को खबर कैसे हो गई?
तुम्हारी मूर्खता से! मैंने कहा था कि अपनी बोट को समुद्र में इस जगह रोककर रखने के बजाय इधर-उधर घुमाते रहो! पर तुम नहीं माने। समुद्र के बीच में खड़ी बोट को देखकर किसी को भी शक हो सकता है!
फिर ये तो कोस्ट गॉर्ड्स हैं!
इनका काम ही शक करना है!
खैर! हम इनके लिए भी तैयार होकर आए हैं। तुम जल्दी से जल्दी जो समेट सकते हो, समेटो। फिलहाल हम यहां से निकलते हैं। नेवल से परमीशन लेकर दुबारा वापस आ जाएंगे!
निशाना साधने की जरूरत नहीं थी। गन से निकले हारपून के आगे 'टाईमर एक्सप्लोसिव' फिट था-
एक ही धमाके से दोनों गॉर्ड्स की पसलियां उनके फेफड़ों में पैवस्त हो गई-

ओह! ये तो हम पर गोलियों की बौछार कर रहे हैं।
ऐसे तो कोई न कोई गोली हमको लग ही जाएगी! अपने आखिरी एक्सप्लोसिव का इस्तेमाल करना ही पड़ेगा।
एक्सप्लोसिव दगा–
और आशा के ही अनुरूप कोई भी कोस्ट गार्ड पीछा करने की स्थिति में नहीं रहा–
कुछ ही देर में चिड़िया ने राजनगर के रक्षक को ढूंढ लिया था–
अब कोई हमारा पीछा नहीं कर पाएगा! फिलहाल किसी गाड़ी पर कब्जा करके यहां से खिसक लो!
उनके बाद सेठ तक पहुंचने का तरीका ढूंढते रहेंगे।
दोनों यह सोच भी नहीं सकते थे–
कि उनके सर पर मंडराती चिड़िया–
उनके लिए खतरे का कारण बन सकती है–
ओह! समझ आया! चलकर मुझे बताओ कि कहां पर हैं वे दुष्ट इंसान?
चीं चीं चीं चीं
ध्रुव एक बड़े अपराध को रोकने के लिए रवाना हो रहा था–

और इसी वक्त- राजनगर के एक दूसरे हिस्से में काफी चहल-पहल थी-
यार, यह 'अखिल भारतीय अस्पताल सम्मेलन' का आइडिया जिसने भी सोचा है, उसकी खोपड़ी खोलकर उसके दिमाग को चूम लेना चाहिए!
जानकारी और ज्ञान बढ़ने के साथ-साथ थोड़ा सा दिल भी बढ़ जाता है! और... हाय... आंखों की सिंकाई भी हो जाती है!
ALL INDIA HOSPITAL
सुधर जा तरुण! डॉक्टरी पढ़कर कॉस्मेटिक सर्जन बन गया है, तो थोड़ा सोबर हो ही जा! वरना किसी दिन इतनी पिटाई होगी कि खुद सर्जरी करवानी पड़ेगी!
वैसे भी माहौल का तो ख्याल कर! हम इस सम्मेलन के मेजबान हैं। भारत के लगभग हर बड़े शहर से हॉस्पीटल टीमें यहां पर आई हैं!
उन पर हमारा क्या इम्प्रेशन पड़ेगा?
तुझे इम्प्रेशन की पड़ी है सोमू, और यहां सीने के पिंजरे में बंद दिल का पंछी धाड़-धाड़ कर रहा है कि कैसे इस पिंजरे से निकलकर कहीं जाकर अपना घोंसला बसा ले!
वाऊ! वो ऽऽ हसीना कौन है, सोमू?
वो हसीना तेरा पसीना निकाल देगी। दिल्ली से आई है...
'न्यू दिल्ली इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की टीम के साथ!
वहां पर रिसेप्शनिस्ट है! और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये विधवा है, और इसे पुरुषों से सख्त नफरत है!
अरे, तुझे क्या हो गया? तू एकदम से सीरियस क्यों हो गया?
इसको देखकर मुझे उसकी याद आ रही है, जिसे मैं कभी भूला ही नहीं!
इसका नाम तुझे पता है सोमू?
हां! इसका नाम चंदा है। सर-नेम का पता नहीं! क्योंकि अब ये अपने पति के नाम का इस्तेमाल नहीं करती!
चंदा!
यानी... यानी ये वही है! वही है! बरसों की भटकन आज खत्म हो गई!

इस तरह घटनाक्रम से बेखबर चंदा अपनी ही समस्या के बारे में सोच रही थी-
इस भीड़भाड़ से जल्दी ही निकल लेना चाहिए। वरना अगर कहीं किसी मुसीबतज़दा स्त्री की कहीं से चीख सुनाई पड़ गई तो मैं शक्ति की चंदा के रूप पर हावी होने से नहीं रोक पाऊंगी।
और इतने सारे लोगों के आगे मेरा भेद खुल जाएगा।
चंदा!
मुझे कौन आवाज दे रहा है?
त... तुम...
कौन हैं आप? क्या चाहते हैं?
क्या कह रही हो चंदा? मुझे पहचाना नहीं! मैं तरुण हूं। थर्ड इयर एम.बी.बी.एस का तुम्हारा क्लासमेट!
मैंने तुमको कहां-कहां नहीं ढूंढा चंदा! पर तुम्हारा कहीं पता नहीं चला! फिर पता चला कि तुम्हारे घरवालों ने जबर-दस्ती तुम्हारी शादी...
ओह! मैं और आगे नहीं सुन सकती!...
...ऐ मिस्टर! का खोलकर सुन लो! मुझे पुरुषों से नफ़र है! और उन पुरुषों से सख्त नफरत है जो लड़कियों से ख्वा ख्वाह की जान-पहच निकालने की कोशिश करते हैं।
नाऊ, गेट लॉस्ट! और अगर मेरा पीछा करने की कोशिश की तो याद रखना, मुसीबत में पड़ जाओगे!
मुझे यहां से दूर जाना ही होगा! तरुण ने एकाएक सामने आकर मेरे दिमाग में तूफान उठा दिया है!
?
पुरानी यादें मेरी याददाश्त को झकझोर रही हैं! ओफ्! यह क्या हो गया!

कोई आ रहा है।
घड़ घड़ घड़
SHINING HAIR
ठक्क

लेकिन मोटरसाइकिल न रुक सकी–
जब तक ध्रुव संभलकर खड़ा होता तब तक कार फ्लाई-ओवर से उतरने के लिए मुड़ चुकी थी–
ओह! ये जा रहे हैं। स्टार-लाइन का प्रयोग करके मैं जल्दी नीचे नहीं पहुंच पाऊंगा। क्योंकि ढलान मुझे झूलने की जगह नहीं देगी। लटक-लटक कर उतरना पड़ेगा। कोई और रास्ता सोचना होगा, इन तक जल्दी पहुंचने के लिए...

अगले ही पल- स्टार लाईन हवा में लहराई। और स्टार का नुकीला सिरा एक आलू में आ धंसा-
थ... यह क्या कर रहा है? आलू से क्या करेगा?
पता नहीं! लेकिन मुझे इतना जरूर मालूम है कि ये खतरनाक लड़का आलू से भी बम का काम ले सकता है।...
...गाड़ी लहराकर इसको गिराने की कोशिश करो!
गाड़ी सड़क पर खतरनाक तरीके से लहराने लगी। और ध्रुव उस पर अपना संतुलन बनाने का प्रयत्न करता रहा-
...तो वह नहीं होता, जो हुआ था!...
चंदा ओ चंदा ऽऽऽऽऽ किसने चुराई ऽऽ तेरी मेरी निंदिया ऽऽऽऽऽ
अरे, पीछे तो देखो!
GIRLS HOSTEL
अपने ख्यालों से लड़ाई कर रही चंदा, सोच में इतनी गहरी डूब चुकी थी कि उसे यह भी होश ना था कि वह कहां चल रही है-
वह सड़क के बीचों-बीच चल रही थी-
तरुण एकाएक मेरे सामने क्यों आ गया? किस्मत ने मुझे दुख के अलावा कुछ नहीं दिया। काश! सात साल पहले मैंने हिम्मत की होती तो...

तुम्हारे 'मेडिकल गर्ल्स होस्टल' के खूसट चौकीदार को कैसा चकमा देकर तुम्हारे रूम तक पहुंच गया। वैसे सबसे पहले तो माफी मांग लूं।...
...क्योंकि आज मैं पहली बार तुम्हारे रूम तक आया हूं। वैसे तो हम बाहर ही मिल लिया करते थे, लेकिन दो दिन से न तो तुम क्लास अटेंड करने आईं, और न ही मेरे पास कोई मैसेज भेजा!
तुम कुछ बोलती क्यों नहीं चंदा?
अरे! तुम तो पैकिंग कर रही हो! और तुम्हारी आंखों में आंसू?
आखिर बात क्या है? सब-कुछ ठीक तो है न?
कुछ भी ठीक नहीं है तरूण! पापा को हमारे बारे में सब पता चल गया है!
और वे हमारे मिलने-जुलने के सख्त खिलाफ हैं!
पर क्यों? आखिर मुझमें क्या कमी है?
तुम्हारी तरह मैं भी मेडिकल की पढ़ाई कर रहा हूं। थर्ड इयर में पहुंच गया हूं! अच्छे खानदान और खाते-पीते घर का हूं। बुरी आदतें नहीं हैं मुझमें। फिर क्यों?
पापा के हिसाब से तुम हमारी हैसियत के नहीं हो तरूण!
तुम तो जानते ही हो कि पापा मिनिस्टर हैं। उन्होंने मुझसे बिना पूछे मेरी शादी किसी और मंत्री के बेटे से तय कर दी है!
ऐसा वे कैसे कर सकते हैं? आखिर तुम्हारी मर्जी भी कोई चीज है। तुम मना कर दो!
तुम पापा को नहीं जानते तरूण! उनके सामने मैं तो क्या, कोई भी जुबान तक नहीं खोल सकता। अब मैं तुमसे शायद कभी मिल नहीं पाऊंगी, क्योंकि...
...मैंने इसका नाम मेडिकल कॉलेज से कटवा दिया है।...

पापा!
जिस कॉलेज में तुम्हारे जैसे लफंगे पढ़ते हों, उस कॉलेज के गर्ल्स हॉस्टल में लड़कों का घूमना तो आम बात होगी।
और ऐसे कॉलेज में मेरी बेटी कभी नहीं पढ़ेगी!
आप मुझे गलत समझ रहे हैं, सर! गर्ल्स हॉस्टल में मैं पहली बार आया हूं। और मैं कोई लफंगा नहीं हूं।...
...मैं भी एक अच्छे खानदान का शरीफ लड़का हूं!
अगर तू सच कह रहा है तो तू किसी और के खानदान की औलाद होगा! जब मौका मिले तो अपनी मां से पूछ लेना कि तू उन्हें किस गटर से मिला था।
सर, आप मेरी बेइज्जती कर रहे हैं। और वह भी बिना किसी कुसूर के!
"तरुण के इरादे कतई भी खतरनाक नहीं थे। वह तो सिर्फ जोर से बोलने की झोंक में एक कदम आगे बढ़ा था—"
"लेकिन पापा के सिक्योरिटी गार्ड्स ने इसका कुछ और ही मतलब निकाला। बंदूक के बट की एक ही चोट से तरुण लहूलुहान हो गया। और पापा मुझे घसीटते हुए मेडिकल कॉलेज से बाहर ले आए—"

वही मेरी तरुण से आखिरी मुलाकात थी। घर पहुंचते ही आनन-फानन में मेरी शादी दिनेश पाठक से कर दी गई। डॉक्टर बनने का मेरा सपना तो अधूरा रह गया, लेकिन मेडिकल लाइन से मेरी दिलचस्पी कम नहीं हुई। इसीलिए मैंने हॉस्पिटल में रिसेप्शनिस्ट की नौकरी कर ली! और उसी नौकरी के कारण एक बार फिर तरुण मेरे सामने पड़ गया!
दिनेश के कुकृत्यों ने तो मेरे दिल में पुरुषों के लिए नफरत पैदा कर दी थी!
लेकिन तरुण से मुलाकात शायद इस नफरत को खत्म कर रही है!
पर मैं विधवा हूं! और मुझे यह तक पता नहीं कि तरुण ने भी शादी कर ली है या...
...नहीं SSSSS
लहराती गाड़ी की टक्कर ने चंदा को उठाकर दूर फेंक दिया! और इस टक्कर के कारण ध्रुव भी अपना सन्तुलन खोकर गाड़ी की छत से नीचे आ गिरा—

लेकिन नीचे गिरने से, ध्रुव को वह करने का मौका मिल गया, जो वह करना चाहता था-
घचाप
एक ही धक्के से आलू
कार के साईलेंसर में धंसकर फिट हो गया-
और अजीब-अजीब आवाजें निकालती गाड़ी एक झटके से रुक गई-
चिरररर्रर्र...
घर्रर्र
ध्रुव तेजी से चंदा की तरफ लपका
आप ठीक तो हैं न?
ज्यादा चोट तो नहीं आई आपको?
न... नहीं! थोड़ी गलती मेरी थी, और बाकी इस ड्राइवर की रैश ड्राइविंग की!
लेकिन गाड़ी से निकल कर भागने वाले तो अपराधी लग रहे हैं!
वे अपराधी ही हैं!...
...लेकिन जहां तक भागने की बात है...
... ये सुपर कमांडो ध्रुव से बचकर नहीं भाग पाएंगे!
धाड़
तड़ाक

... और उनके आने तक मैं तुम दोनों के गिफ्ट पैक तैयार कर दूंगा।
चंडा से थोड़ी दूर निकल आया था–
इन दोनों अपराधियों ने तुमको चोट पहुंचाई है! इसका दंड इनको भुगतना होगा चंडा!
गलती मेरी भी थी शक्ति! मैं ही सड़क पर चल रही थी। और फिर मैंने तुमको मदद के लिए बुलाया भी नहीं है।

घटना मेरे सामने घट रही थी तो तुम्हें बुलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती...
ध्रुव का काम लगभग तमाम हो चुका था—
अब मैं तुम लोगों को 'स्टार-कफ्स' में बांधकर छोड़ जाऊंगा! ताकि 'कोस्ट गार्ड्स' या पुलिस वाले आकर तुम लोगों को हिरासत में ले लें!

ध्रुव नहीं जानता था कि वह घायल लड़की अपने स्थान से गायब हो चुकी है, और दूसरे क्षण ही उनके पास पहुंच चुकी है–
...क्योंकि तुझे उस घायल लड़की को अस्पताल भी पहुंचाना...
...आऽऽऽह!
ताड़!
शक्ति के रास्ते से हट जा लड़के! दंड देना शक्ति का काम है, तेरा नहीं!

अह!
अक!
न्यायोचित? लेकिन तुम हो कौन? पहले तो तुमको राजनगर में कभी नहीं देखा! इन्होंने ऐसा क्या अपराध किया है जो तुम इनका दम घोंट दे रही हो!
इन लोगों ने एक स्त्री पर बिना कारण घातक हमला किया है! और स्त्री की रक्षक शक्ति इनको न्यायोचित दंड देगी!
मैं शक्ति हूं! नारी अस्मिता की रक्षक!
और मैं राजनगर तो क्या, पूरे ब्रह्मांड में विचर सकती हूं!
इन दुष्टों ने बचाने का समय रहते एक स्त्री को वाहन से टक्कर मारी है! और इसी अपराध का दंड ये भुगत रहे हैं!

मुझे यह तो पता नहीं कि 'तुम' कहाँ से आई हो! लेकिन राजनगर में बिना दूसरे पक्ष की बात सुने दंड देने का प्रावधान नहीं है। और वह दंड अगर देना ही पड़ा तो उसका अधिकार सिर्फ न्यायालय को है। मुझे या तुमको नहीं?
वैसे तो मैं स्त्रियों पर वार करने से परहेज करता हूँ शक्ति...
...लेकिन तुम्हारे केस में मुझे यह परहेज छोड़ना ही पड़ेगा। क्योंकि मेरा पहला काम कानून की सुरक्षा है! और वह 'सुरक्षा' यह कहती है कि इन दोनों को सही-सलामत हालत में पुलिस स्टेशन पहुँचाना होगा।
दोनों गोताखोर तो जमीन पर गिरने के बाद भागने की स्थिति में कतई नहीं थे। लेकिन ध्रुव के वार ने शक्ति की क्रोधाग्नि में घी जरूर डाल दिया था-
तूने इन कीड़ों का पक्ष लेकर शक्ति से टकराने की जुर्रत की! अब तुझे मुझ पर वार करने की सजा भुगतनी होगी।
क्योंकि मैं भी एक स्त्री हूँ। और स्त्रियों पर वार करने वालों को मैं छोड़ती नहीं।
धमाक
वार इतना जोरदार था...

...कि हवा में उड़ता हुआ ध्रुव जमीन से टकराने के बाद भी काफी दूर घिसटता हुआ चला गया...
ठक्क
ध्रुव अभी शक्ति की शारीरिक शक्ति पर ही आश्चर्य कर रहा था—
जबकि उसे तो अभी शक्ति की कई आश्चर्यजनक शक्तियां देखनी थीं—
सजा भुगतने के लिए तैयार हो जा ध्रुव। शक्ति पर हाथ उठाने की सजा, शक्ति तेरे शरीर पर घाव लगाकर देगी!
इसके हाथ से तीव्र ऊष्मा निकलकर उस मैनहोल के ढक्कन को पिघलाकर, हथियारों का रूप दे रही है, और ये हथियार अपने-आप उड़कर मेरी तरफ आ रहे हैं...

ध्रुव ने उन हथियारों से बचने की जी-तोड़ कोशिश की। लेकिन कभी ध्रुव सफल हो पाया-
तो कभी हथियार निशाना चूक गए-
आऽऽऽ ह! इन हथियारों की गति बहुत तेज है, और दिशा सटीक! ऊपर से ये संख्या में भी बहुत ज्यादा हैं! अभी तो एक घाव ही लगा है। लेकिन और घाव लगते देर नहीं लगेगी। अपना बचाव करने से यह लड़ाई खत्म नहीं होगी!... लड़ाई खत्म करने के लिए आक्रामक रुख अपनाना पड़ेगा!
यह रुख अपनाने का एक ही तरीका मेरे दिमाग में आ रहा है। पर उसके लिए इन शैतानों को यहीं छोड़कर जाना होगा!
फिलहाल तो ये बेहोश लगते हैं! और उम्मीद यही है कि ये जल्दी होश में आ भी नहीं पाएंगे! इसलिए इनके निकट भविष्य में भाग पाने का तो सवाल ही नहीं उठता!...
ध्रुव पहले से ही बिजली के पोल से लटक रही स्पर लाइन को पकड़कर उछला-
...और जब तक ये होश में आएंगे, तब तक उम्मीद है कि मैं जिन्दा वापस आ जाऊंगा!
ओह! तो तू भाग रहा है। पर शक्ति एक बार जिसके पीछे लग जाए, उसके लिए तीनों लोकों में भी छिपने का स्थान नहीं है!

मैं न तो भाग रहा हूं, और न ही छिपने का रास्ता ढूंढ रहा हूं। मैं तो यहां पर तुम्हारे हथियारों का जवाब देने के लिए अपना हथियार ढूंढने आया हूं।...
...और मेरा हथियार है मोटरसाइकल का यह शॉक एब्जॉर्बर!
अब मैं तुम्हारे वारों का जवाब तुम्हारे ही हथियारों से दे सकता हूं! इस शॉक एब्जॉर्बर से मैं तुम्हारे हथियारों की नोक तुम्हारी तरफ ही मोड़ सकता हूं!
ओह! इस स्प्रिंग से टकराकर मेरे ही हथियार दुगुनी तेजी से मेरी तरफ आ रहे हैं!
मुझे अपने शरीर को स्थान-स्थान पर 'प्रकाशमान' करना होगा, ताकि ये हथियार बिना मुझे नुकसान पहुंचाए आर-पार हो जाएं!
लेकिन एक साथ अपनी दो शक्तियों का प्रयोग करने से मैं किसी भी शक्ति का प्रयोग ठीक से नहीं कर पाऊंगी। मुझे फिलहाल हथियारों का छोड़ना रोकना होगा।
ध्रुव इसी पल का इंतजार कर रहा था–
ताकि बचाव करने की आवश्यकता हटते ही वह आक्रामक रुख अपना सके–
उसके शक्तिशाली बाजुओं ने मोटरसाइकल से पैट्रोल टैंक को अलग खींच लिया–

और उसने शक्ति की तरफ उछाल फेंका-
फलस्वरूप मैंने ही पेट्रोल से पूरी तरह भरे टैंक ने एक भभक के साथ शक्ति के शरीर को घेर लिया-
भभक
ओह! यह आग मुझे नुकसान तो नहीं पहुंचा सकती, क्योंकि मैं खुद ही ऊर्जा का रूप हूं! लेकिन जब तक मैं मानव रूपी शरीर में रहूंगी, तब तक यह आग मुझे बेचैन करती रहेगी!
और इस बेचैनी में मैं अपने वारों को केन्द्रित नहीं कर पाऊंगी! इस आग से बचने का एक आसान रास्ता है—
—लेकिन इस लड़के को अब मैं मुक्त रहने नहीं दूंगी।
धड़ाम
?
अब यह कुछ पलों तक ज्यादा उछल-कूद नहीं कर पाएगा। और इतनी देर में मैं इसको ऐसे फौलादी बंधनों में बांध दूंगी, जिससे यह कभी निकल नहीं पाएगा।

शक्ति ने बिजली के पोल को पिघलाकर, सरिया का रूप देना शुरू कर दिया-
और शक्ति की शक्तियों के इशारे पर नाचती सरिया ने ध्रुव को अपने घेरे में लेना शुरू कर दिया-
ओह! इसकी शक्तियों का तो कोई अन्त ही नहीं है। अब ये मुझे लोह बंधनों में जकड़ रही है।
वह इसलिए ताकि तुम उछल-कूद न कर सको! और मैं तुमको न्यायोचित दंड दे सकूं।
धम्म
योजना अच्छी है शक्ति! लेकिन ये खंभे बहुत मजबूत लोहे के नहीं होते हैं। मेरा रसिड कैप्सूल इन सरियों को कुछ ही पलों में इतना गला देगा...
हिस्स
...कि मैं इसको आसानी से तोड़ सकूं।
उमम्फ
कट
चट
ओह! इतनी कड़ी टक्कर तो मुझे युगों से किसी ने नहीं दी!

धमाक

अब मैं तुझे ऐसे शक्तिजाल में कैद करूंगी जिससे तू कभी निकल नहीं पाएगा। शक्ति को हर जगह ऐसे जाल बनाने के लिए धातु मिल ही जाती है, और यहां कहीं भी...
आहा! मिल गई। तुम लोगों की इधर-उधर चीजें फेंकने की आदत मेरे बड़े काम आती है!
ध्रुव को पता था कि शक्ति को क्या चीज नजर आई है—
यह तेरा आखिरी वार है। यह अगर असफल हो गया तो फिलहाल मेरे पास और कोई रास्ता नहीं बचेगा!
रास्ता धीरे-धीरे बंद हो रहा था। क्योंकि शक्ति के हाथ की गर्मी ने उस धातु के तानों-बानों को बुनना शुरू कर दिया था—
लेकिन इससे पहले कि जाल ध्रुव तक पहुंच पाता—
एक धमाका हुआ, और असावधान शक्ति का शरीर हवा में उड़ गया—
ब बड़ाााामम
आहा! योजना सफल रही! मैं शक्ति को खींचता हुआ, यहां तक ले आया था, जहां दोनों गोताखोरों के ऑक्सीजन टैंक पड़े हुए थे। नया आकार होने के कारण शक्ति यह नहीं समझ सकी कि वे ऑक्सीजन से भरे प्रेशराइज्ड टैंक हैं।

यह क्या? यह फिर प्रकाश में बदलकर क्यों आ रही है? कहीं यह फिर मुझ पर हमला तो नहीं करने आ रही है?

नहीं! यह मुझसे दूर जा रही है! जरूर इसके साथ कोई मजबूरी रही होगी! वर्ना यह मुझे छठी का दूध याद दिलाकर ही जाती! खैर!...
...फिलहाल तो यह लड़ाई खत्म हो गई है! अब चल कर उन गीतारवीरों को देखूं! कहीं वे भाग न गए हों?
लेकिन ध्रुव को उस स्थान तक जाने की जरूरत नहीं पड़ी। गीतारवीर उसको रास्ते में ही मिल गए-
धन्यवाद ध्रुव! मुंह से हमको पता गया कि इनको और एक महिला ने पकड़ा है!
पर मुझे तो तुम्हारे साथ कोई महिला नजर नहीं आ रही!
महिला! ओह... आप कोस्ट गार्ड्स बहुत सही समय पर आए हैं! क्योंकि मुझे तुरन्त कहीं जाना है!...
...उस लड़की के पास जो कार की टक्कर से घायल हो गई थी! इस लड़ाई के चक्कर में तो मैं उसे भूल ही गया था!
ध्रुव, तेजी से चन्दा की तरफ लपका-
और जल्दी ही चंदा के पास पहुंच गया-
इस दौरान शक्ति, चंदा के रूप में बदलकर उसी स्थान पर वापस पहुंच चुकी थी-
अरे! आपको क्या हुआ? आपकी हालत तो काफी खराब लग रही है! पर अभी तो आप कह रहीं थी कि आप एक-दम ठीक हैं!...
...मैं अभी आपको अस्पताल ले चलता हूं!

मेरी मोटरसाइकिल का तो कचूमर निकल गया है! और इस बेहोश लड़की के साथ स्टार लाइन पर झूलकर जाना खतरनाक होगा!
आसपास कोई टैक्सी या सवारी भी नहीं... आहा! एक कार है! वही कार जिस पर चढ़कर गोताखोर लुटेरे आ रहे थे!
चालू हालत में हो जाएगी!
राजनगर के चप्पे-चप्पे की जानकारी रखना आज काम आ रहा है। वर्ना मैं ढूंढता और पूछता ही रह जाता कि वह कॉन्फ्रेंस आखिर किस स्थान पर हो रही है। पर मुझे मालूम है वह कॉन्फ्रेंस कहां पर हो रही है! और वह स्थान यहां से ज्यादा दूर भी नहीं है!
'आप' नहीं 'तुम' कहो ध्रुव! और तुमने इसको यहां लाकर इसकी ही नहीं, बल्कि मेरी भी लाज निकलने से बचा ली है।

और उधर परिस्थितियां भी दूसरा मोड़ ले रही थीं–
क्या? ऑपरेशन 'डीप सी' असफल हो गया?
हमारे आदमी माल के साथ पकड़े गए! पर कैसे?
हमने तो कम आदमी इसीलिए भेजे थे ताकि वे किसी की नजर में नहीं आएं और आराम से काम करके वापस आ जाएं!
कोस्ट गार्ड्स ऑफिस से हमारा एक आदमी जानकारी लेकर आया है!
गलती हमारे आदमियों की है। उन्होंने बोट को इधर उधर घुमाने के बजाय एक ही स्थान पर खड़ा कर दिया। कोस्ट गार्ड्स को शक हो गया, और हमारे आदमियों को माल सहित राजनगर की तरफ भागना पड़ा! वहीं पर उनको एक औरत और ध्रुव से टकराना पड़ा, और वे पकड़े गए!
ध्रुव! फिर वही ध्रुव! एक बार फिर हमारे काम में टांग अड़ा दी उसने! काहिरा तो उसकी बोटी-बोटी करके नाली में बहा दूं!
दुबारा ऐसे लफ्ज जबान पे आए तो न तो मुंह में जबान रहेगी, और न ही आवाज निकालने के लिए गला!

और रात की गश्त खत्म करने के बाद आराम कर रहे ध्रुव की तैयारी शुरू होने वाली थी-
ट्रिन ट्रिन... ट्रिन ट्रिन...
हैलो! ध्रुव हियर!
ध्रुव! मैं पुरातत्त्व विभाग से प्रोफेसर बलिया बोल रहा हूं। तुमने जिन शातिर लुटेरों को पकड़ा था, उनके बैग से पुर्तगाली डिजाइन के गहने और रत्न मिले हैं। कोस्ट गार्ड ने भी इस बात की पुष्टि की है कि राजनगर तट के पास एक पुर्तगाली जहाज डूबा हुआ है।
अच्छा! पर आपने मुझे इस वक्त फोन क्यों किया है?
हमारे अन्दाज के हिसाब से ये चीजें सोलहवीं सदी की हैं, और प्राचीन होने के कारण बड़ी महंगी भी हैं।
सरकारी स्तर पर इस डूबे जहाज की सुरक्षा की तैयारी करने में एक-दो घंटे लग जाएंगे, और हमको डर है कि उस दौरान ये लुटेरे दुबारा इस प्राचीन संपदा को चुराने की कोशिश कर सकते हैं।
हम चाहते हैं कि उन एक-दो घंटों के दौरान तुम उस डूबे जहाज पर नजर रखो।...
...हम जानते हैं कि तुम्हारी पानी में सांस ले सकने की शक्ति के कारण यह काफी आसान काम होगा।
ठीक है प्रोफेसर बलिया! मैं अभी अपने ऑफिस पहुंचता हूं, और वहां से डूबे जहाज के स्थान का पता लेकर निगरानी के लिए जाऊंगा।
आप मुझे अपने ऑफिस का पता बता दीजिए!
ध्रुव ने तैयार होने में ज्यादा वक्त नहीं लिया-
श्वेता, जल्दी से मेरा नाश्ता लगा। मुझे जाना है।

ध्रुव ने बहन के प्रेम की अपने बदन पर सजाने में ज्यादा वक्त नहीं लगाया–
और उसके सारी चीजें पहनते ही 'लिटिल-जीनियस' श्वेता की रनिंग कमेंट्री चालू हो गई–
ये तुम्हारे दाहिने हाथ का ब्रेसलेट है, भइया! इसमें स्टार ब्लेड की कार्टिलेज भरी हुई है।
इसका ट्रिगर तुम्हारी हथेली की तरफ निकला हुआ एक छोटा सा लीवर है।...
ये तुम्हारे बाएं हाथ का ब्रेसलेट है ध्रुव भइया!
इससे तुम स्टार लाइन छोड़ सकते हो! तुम चाहो तो वह लाइन इससे अटकी भी रहेगी, और चाहो तो अलग भी हो जाएगी। इसके साथ-साथ तुम्हारी नई और पुर्नसन से धातु की बनी पाउचों से भरी बेल्ट में भी अन्य हर आवश्यक वस्तु के साथ स्पेयर 'स्टार लाइन' भी है। इसके 'स्टार बकल' में ट्रांसमीटर के साथ-साथ एक स्पेशल 'लॉकिंग सिस्टम' भी लगा हुआ है, ताकि कोई भी न तो तुम्हारी बेल्ट को काट सके और न ही खींचकर अलग कर सके।
इससे तुम एक बार में सौ 'माइक्रो-थिन' यानी पतली मोटाई के ब्लेड छोड़ सकते हो!
ये तुम्हारे बूटों का होल्डिंग स्ट्रैप है। कितना भी जोर डाल लो, बिना इसे ढीला किए बूट नहीं खुलेंगे!
और आखिर में तुम्हारे बूटों पर फिट किए जा सकने वाले ये व्हील कवर।
अब तुम किसी तेज गति वाले वाहन का भी पीछा कर सकते हो। इनमें लगे 'पुश बैक' स्प्रिंग व्हील के जरिए...

तू ही कमाल है श्वेता! तूने तो दुनिया ही बदलकर रख दिया!
मुझे पूरी उम्मीद है कि पेंटी की मदद से तुम अपराधियों का ही हुलिया बदलकर रख दोगे।
और वह भी, पहले से ज्यादा तेजी से!
ऐसा ही होगा श्वेता!
ऐसे ही जाना होगा।
ध्रुव का यह दाव बहुत जल्दी ही कमेटी पर भारी पड़ने वाला था—
क्योंकि ने उस बहुमूल्य वस्तु को ढूंढने का अभियान शुरू कर दिया था, जो दुनिया को उनकी मुट्ठी में समेट सकती थी—
चीज़ें ढूंढने का काम मैं खुद करूंगा!...
— वैसे तो तुझे 'चीज़ें' नहीं, सिर्फ एक चीज़ ढूंढनी है। और वह भी बहुत जल्दी। क्योंकि कोल्ड ब्लडेड कभी भी और संख्या में आ सकते हैं!

पहला पहरेदार जब तक कुछ समझ पाता, तब तक ध्रुव उसका ऑक्सीजन पाइप अलग कर चुका था-
अब ये सीधा समुद्र की सतह पर ही जाकर रुकेगा! जहां इसकी पोशाक इसे समुद्र की सतह पर तैरता रखकर डूबने से बचाए रखेगी!
लेकिन इस बार ध्रुव के दिमाग से एक बात फिसल गई थी-
हेलमेट में लगे माइक्रोफोन के ज़रिए उस गोताखोर की चीख दूसरे गोताखोर तक पहुंच गई थी-
और उसने पलटकर अपनी तरफ आते ध्रुव को काफी पहले ही देख लिया-
हारपून गन ध्रुव की तरफ तन गई-
आऽऽऽह!
लेकिन श्वेता के उपहार, ध्रुव के बड़े काम आए-
'स्टार-ब्लेड' के एक सटीक वार से हारपून गन गोताखोर के हाथों से छूट गई-
श्वेता के ब्रेसलेट बड़े काम आ रहे हैं। वरना पानी की लहरों में हाथ घुमाकर 'स्टार-ब्लेड' फेंकने में मैं ब्लेड को वह गति नहीं दे पाता, जो इस ब्रेसलेट ने ब्लेड को दी है!

अब सबसे पहले 'स्टार ट्रांसमीटर' को 'सैकेन्डलर फ्रीक्वेंसी' पर कर देता हूं, ताकि अगर यह किसी और को संदेश भेजना चाहे तो इसकी रेडियो तरंगों में इतना व्यवधान उत्पन्न हो जाए कि उसे कोई साफ पकड़ ही न पाए।...
...और फिर अपने बाएं हाथ के ब्रेसलेट का इस्तेमाल करके इसकी स्टार लाइन से ऐसा जकड़ दूंगा कि यह डूबे जहाज के मलबे से लटका रह जाए।...
—और फिर देखूं कि इस मलबे के अन्दर कितने लोग हैं, और वे क्या चाहते हैं?
मलबे के अन्दर लोग नहीं, सिर्फ एक शख्स था... या कहिए थी! और वह जो चाहती थी, अब वह उसकी आंखों के सामने था—
यह 'चर्म डायरी' जरूर इसी जहाज के मलबे में से मुक्त होकर समुद्र की सतह पर तैर रही होगी, जब वह मुझे मिली थी। इसके महत्व को समझ कर मैंने स्पेनिश भाषा सीखी, और उसके बाद मुझे इसकी असली कीमत का पता चला।

ओह! यह लॉकेट तो इस डायरी में बने रेखाचित्र से मेल खा रहा है। इसमें इस 'चर्म डायरी' के लेखक जादूगर विकारियों ने अपने गले में पड़े लॉकेट को इसी प्रकार का बताया है। यानी... यह विकारियों का ही कंकाल है!...
...और अगर ये विकारियों का कंकाल है तो वह बॉक्स जरूर इसी पेटी में बन्द होना चाहिए।
पेटी का गल चुका ताला, एक हल्की सी ठोकर से ही टूट गया—
और कुछ ही पलों बाद, नताशा के हाथ में वह अजीबो-गरीब बॉक्स था, जिसमें वह शक्ति कैद थी—
बॉक्स तो यही है! इसमें से बहुत तेज चमक फूट रही है! क्या यही वह शक्ति है, जिसका जिक्र विकारियों ने अपनी डायरी में किया है। लेकिन इसका उपयोग किया कैसे जाएगा? खैर यह तो बाद में सोच लूंगी। फिलहाल तो सामान मिल गया है। अब यहां से जल्दी से जल्दी निकल लेना चाहिए!...
तभी नताशा के ट्रांसमीटर के रिसीवर पर एक गंभीर आवाज गूंज उठी—
निकलने की इतनी जल्दी क्या है, नताशा?
?
इतने दिनों बाद मिले हैं, हाल-चाल तो कम से कम बताती जाओ!
ध्रुव! त... तुम यहां पर?

यह भी नहीं पता कि आखिर यह इस शक्ति को इस जहाज में कहाँ लेकर जाना चाहता था। इसीलिए मुझे इस 'कोन रूपी बॉक्स' को अपने अड्डे ले जाना पड़ेगा, ताकि इस पर सही शोध की जा सके।
लेकिन जैसे पृथ्वी पर गिरी किसी वस्तु पर किसी एक व्यक्ति का हक नहीं हो सकता वैसे ही इस 'कोन' पर भी तुम्हारा हक नहीं हो सकता। इसे मुझे सौंप दो।
इसकी मुझे उम्मीद नहीं थी...
मैं तुमको नुकसान पहुंचाना नहीं चाहता नताशा। इसीलिए मुझे यह 'कोन' चुपचाप सौंप दो।
कभी नहीं! इसके बारे में सबसे पहले मुझे पता चला। इसीलिए इस पर मेरा हक है।
कि उसके शीर्ष से ऊर्जा की एक लहर, अन्दर से आजाद होकर नताशा के शरीर में समाने लगी—
इस छीना-झपटी में 'कोन' का न जाने कौन सा हिस्सा दब गया—
चारों तरफ चकाचौंध कर देने वाली रोशनी फैलने लगी—

और जब रोशनी की वह चमक खत्म हुई-
तो ध्रुव की नज़रों के सामने तलाशा नहीं, कोई और खड़ा हुआ था-
—सवाल यह है कि 'कैद' में सैकड़ों सालों तक बन्द रहने के बाद यह शक्ति आज़ाद होकर अब आखिर करेगी क्या?

अगले ही पल ध्रुव को पता चल गया कि वह प्राणी क्या करना चाहता था-
ओह! यह नाच-नाचकर ऊर्जा की तेज लहरें छोड़ रहा है! शायद आज़ाद होने की खुशी मना रहा है! लेकिन इन ऊर्जा की तरंगों से पानी का तापमान बढ़ रहा है। मछलियां तड़पकर भाग रही हैं। मुझे भी गर्मी महसूस हो रही है!
अगर यह तापमान ऐसे ही बढ़ता रहा तो बाहर बेहोशी की अवस्था में तैर रहे कोस्ट गार्डों और डोंगा-खोर लुटेरों की भी जान पर बन आएगी! नताशा के शरीर का क्या होगा, यह तो अनुमान लगाना भी मुश्किल है! फिलहाल मुझे इस प्राणी को समुद्र से बाहर ले जाना पड़ेगा। और इसका आसान तरीका है, इस पर हमला करना! ताकि यह क्रोधित होकर मेरे पीछे आए...
ध्रुव का वार लगते ही लहरों में लहराते कुछ क्रोधित शब्द उसके कान में आ-कर टकराए-
और फिर जैसा ध्रुव ने सोचा था एकदम वैसा ही हुआ-
मुझे ऐसा लगा, जैसे इसने 'प्रचंडा' चिल्लाया हो! वैसे यह नाम इस पर फिट बैठता है! अब यहां से फटाफट भागा जाए, वरना यह प्राणी इस नाम को सार्थक कर देगा!
ध्रुव तेजी से सतह की तरफ तैरा-

ध्रुव की किनारे तक पहुंचने से पहले तो प्रचंडा नहीं
आऽऽऽह!
घड़ाक
मैं समझ रहा था कि मैं इनको पानी से बाहर खींचकर अक्लमंदी कर रहा हूं। पर यह तो बेवकूफी का काम साबित हो गया, क्योंकि पानी से बाहर आते ही इनकी शक्तियां सक्रिय हो उठी हैं अब इनको पानी के अन्दर ले जाऊं तो कैसे ?

–और तनाशा का शरीर छोड़ने पर मजबूर हो जाए। एक बार वह तनाशा के शरीर से निकल जाए तो इस पर और घातक वार भी किया जा सकता है!
और इसको अतिरिक्त ऊर्जा देने का सबसे उत्तम साधन फिलहाल ये बिजली के तार ही नज़र आ रहे हैं! इसके लिए सबसे पहले तो 'टाइटेनियम स्टील' की स्टार लाइन से प्रचंडा को बांधना होगा!
और फिर 'स्टार लाइन' के दूसरे सिरे को बिजली के तारों पे फेंक देना होगा,
और प्रचंडा...
क्योंकि प्रचंडा को नुकसान पहुंचाने के बजाय, प्रचंडा ने ही बिजली के तारों को नुकसान पहुंचा दिया–
अब ध्रुव के आने की बारी थी–

इधर- सुबह के सूरज के साथ-साथ, चंदा के होश का सूरज भी उग रहा था-
ओह! तो मुझे ध्रुव यहां लेकर आया था!
हां, चंदा! पर दो बातें मुझे समझ में नहीं आईं! एक तो यह कि रात को तुम्हारे शरीर पर चोट के काफी निशान थे! तुम्हारा चेकअप मैंने लेडी डॉक्टर से करवाया था...
...पर इस वक्त वे निशान काफी कम हो गए हैं!... मेडिकल तौर पर ऐसा होना काफी आश्चर्यजनक है!
और दूसरे, तुम्हारे माथे पर बंधी पट्टी भी मुझे उतारनी पड़ी थी! किसी संभावित चोट को देखने के लिए!
तो मुझे तुम्हारे माथे पर एक चीरा दिखा! पहले तो मुझे लगा कि तुम्हारे माथे पर कोई तीसरी आंख है! पर यह तो असंभव है। मैंने उसे 'फॉरसेप' से खोलने की कोशिश भी की! पर वह चीरा खुला ही नहीं! उस पर पलकों जैसे बाल भी हैं! वह आखिर है क्या?
मुझे यही देखे जाने का डर था! इसीलिए मैंने बेहोश होते वक्त अपनी टीम के डॉक्टरों के बजाय, तरुण का नाम लिया था!
क्योंकि एक तो तरुण को समझाना ज्यादा आसान है! और फिर इससे मेरी मुलाकात सिर्फ तभी तक है, जब तक मैं राजनगर में हूं!
चंदा यह नहीं जानती थी कि यह ख्याल उसके दिमाग का है, दिल का नहीं। दिल उसे एक बार फिर खींचकर तरुण के पास लाने वाला था-
चंदा एक अंतरंग मित्र की तरह तरुण को दिनेश पाठक से अपनी शादी, और फिर दिनेश द्वारा किए गए जुल्मों की दास्तान सुनाती चली गई-
उन्होंने मुझे एक खाई में फेंक दिया! पर देवी के आशीर्वाद से मैं बच गई। मेरे माथे का यह निशान, उसी दुर्घटना की देन है!
तुम बताओ! तुमने डॉक्टर बनने के बाद क्या किया?

चंदे! तुम्हारी बहुत तलाश की मैंने! फिर कहीं से पता चला कि तुम्हारी शादी हो गई है! दिल तो टूट गया था, पर मैंने भी शादी करना जरूरी समझा!... ताकि मेरे कुंवारे रहने से यह मतलब न लगाया जाए कि मैं अब भी तुम्हारी उम्मीद लगाए हुए हूं!
शादी तो मैंने कर ली, पर शायद मेरी किस्मत में सुख लिखा ही नहीं था! शशी, यानी मेरी पत्नी की बड़ी-बड़ी इच्छाएं मैं पूरी नहीं कर पाया, और पिछले दो सालों से मैं यहां रहता हूं, और शशी अपनी मां के घर! मेरे तीन साल के बेटे के साथ!
ओह! आई--आई एम सॉरी तरुण!
हां, चंदा! तुम मेरे लिए 'सॉरी' कहो, और मैं तुम्हारे लिए! हम अब बस यही कर सकते हैं। वैसे मुझे लग रहा है कि तुम मुझे पूरी बात नहीं बता रही हो!
तुम्हारे माथे पर एक यह अजीब सा चीरा! चोटों का जल्दी भर जाना! मुझे लग रहा है कि-- खैर छोड़ो! तुमको इस 'चीरे' के कारण हमेशा पट्टी बांधे रखना पड़ता है न? मैं प्लास्टिक सर्जरी करके इसको ढक दूंगा! अगर तुम को एतराज न हो तो!
म--मुझे क्या एतराज हो सकता है!
इससे तो मेरी सारी समस्या ही हल हो जाएगी!
चंदा की कम से कम एक समस्या तो हल हो रही थी–
लेकिन ध्रुव के लिए समस्या अभी वहीं की वहीं थी–
मैं उल्टा सोच रहा था! इसे रोकने का रास्ता इसे ऊर्जा देना नहीं बल्कि इस-की ऊर्जा खींचना है। और इस बार भी यह काम बिजली के तार ही करेंगे!--
--लेकिन वे तार नहीं जिनमें अब तक बिजली दौड़ रही है! बल्कि वे तार, जिनमें संपर्क टूट जाने के कारण विद्युत प्रवाह ठप्प हो गया है!

अब ऊर्जा तारों से प्रचंडा की तरफ नहीं, बल्कि प्रचंडा से तारों की तरफ बहेगी! इस बार का प्रचंडा पर कुछ न कुछ असर तो ज़रूर होना चाहिए।
ध्रुव के इस वार का कुछ नहीं 'बहुत कुछ' असर हो रहा था-
ऊर्जा का प्रवाह इतनी तेज़ी से शुरू हो गया जैसे बांध टूटने से पानी बहना शुरू हो जाता है-
इस वार ने प्रचंडा इतना लड़खड़ा गया कि उसने अपना रूप वापस समेट लिया-
बचा लो... बचा लो...
ओह, कोई नारी मुसीबत में है, मुझको पुकार रही है।
मुझे... मुझे बाथरूम जाना है तरुण! और मुझे डिस्टर्ब मत करना किसी भी कीमत पर नहीं!
हतप्रभ सा तरुण, चंदा को देखता रह गया। उसके भ्रम और शक दोनों ही बढ़ गए थे-
...?
तुमको क्या हो रहा है, चंदा? तुम्हारा शरीर कांप क्यों रहा है?
उसको तो सिर्फ वहां पहुंचना था, जहां से नारी मदद के लिए पुकार रही थी-
लेकिन शक्ति को न तो किसी के शक की परवाह थी, और न ही भ्रम की-
मैंने प्रचंडा को नताशा के शरीर से बाहर निकलते नहीं देखा! यानी वह नताशा के शरीर में ही है। इसको बाहर निकालने का कोई न कोई तरीका तो होगा ही! और वह तरीका मुझे जल्दी से जल्दी सोचना होगा।

ध्रुव को तरीका सोचने का मौका ही नहीं मिल पाया-
दूर हट, इस स्त्री से दुष्ट! मैंने पहली बार ही तुझे जिन्दा छोड़कर गलती की थी!
पर इस बार मैं वह गलती नहीं करूंगी!
ओफ़! क्या मुसीबत है?
तुमने मेरे पीछे पड़ने का ठेका ले लिया है क्या शक्ति?
मैंने स्त्रियों की रक्षा का ठेका लिया है। और इस स्त्री को कष्ट पहुंचाने वाला तेरे सिवाय, कोई दूर-दूर तक नजर नहीं आ रहा है।
एक तो यह 'स्त्री' नहीं, 'कन्या' है शक्ति! और दूसरे इसको कष्ट पहुंचाने वाला इसके शरीर के अन्दर ही है, बाहर नहीं, जो तुमको नजर आ जाए।
शक्ति, नताशा की तरफ मुड़ी और आश्चर्यचकित रह गई। क्योंकि 'प्रचंडा' ने नताशा के ऊपर अपना रूप प्रक्षेपित करना शुरू कर दिया था-
और इससे पहले कि शक्ति यह समझ पाती कि उसे किसको बचाना है-
वह खुद बचाए जाने की स्थिति में स्वयं पहुंच चुकी थी-
आऽऽह! इतना शक्तिशाली वार! यह शक्ति मानवीय नहीं हो सकती!

लेकिन प्राणी मानवीय हो या अमानवीय, शक्ति के सामने ठहर नहीं सकता!
शक्ति के हाथों ने भूमि के धातु कणों को पिघलाकर खींचना और 'पाश' का रूप देना शुरू कर दिया—
लेकिन 'लौह बंधन' प्रचंडा को बांध नहीं पाए—
ओह! मैं ब्रह्मांड में बोली जाने वाली हर भाषा को समझ सकती हूं। यह प्रचंडा कह रहा है कि तुम मानवों ने मुझे मेरे एक 'पहिर' यानी तुम्हारे लाखों सालों तक कैद रखा है! अब मैं दुबारा बंधनों में आने से पहले तुम लोगों को नष्ट कर दूंगा!
'प्रचंडा' कुछ कुछ बोलता जा रहा था, और शक्ति तेजी से उसका अनुवाद ध्रुव को बताती जा रही थी
यह कह रहा है कि यह ऊर्जा और द्रव्य! दोनों ही रूप में रहने वाला प्राणी है। और अपने द्रव्य रूप के कारण पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के पार नहीं जा पा रहा है।...
... यह ऊर्जा रूप में किसी जीवित और बुद्धिमान प्राणी के शरीर में ही रह सकता है। और ऐसा शरीर पृथ्वी पर सिर्फ मानवों का ही है।...
... परंतु यह जिस शरीर में रहेगा, तीव्र ऊर्जा के कारण वह शरीर धीरे-धीरे खोखला होता जाएगा! अगर हमने इसको पृथ्वी के पार जाने का रास्ता ढूंढकर नहीं बताया तो यह सबसे पहले इस लड़की का शरीर खोखला करेगा और फिर कई सारे मानवों का
धाड़

लेकिन मैं तुमको ऐसा करने नहीं दूंगी. मैं पृथ्वी पर आई ही हूं, पहले मित्रों और फिर मानवों की रक्षा करने के लिए. मैं देवी की शक्ति का 'हजारवां भाग' ही हूं! लेकिन फिर भी इन जैसे दुष्टों से निपटने के लिए काफी हूं!
लेकिन मुकाबला इतना आसान नहीं था, जितना शक्ति ने सोच रखा था-
टक्कर बराबर की है।... शक्ति के जीतने की कोई गारन्टी नहीं है। यह अश्वेता पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के पार जाना चाहता है। लेकिन बगैर किसी मानव शरीर में घुसे यह वहां तक नहीं पहुंच सकता।...
तड़!
—और अगर यह किसी स्पेस सूट पहने मानव के शरीर में भी घुसकर जाए तो इसके बाहर निकलने से स्पेस सूट में जो छिद्र होगा, उससे तो वह मानव फट ही जाएगा।— खैर रास्ते तो मिल सकते हैं, पर कोई लंबा तरीका सोचने का समय नहीं है! फिलहाल नताशा को ही बचाना है।... इसको नताशा के शरीर से बाहर निकालना ही होगा, और उसका एक तरीका मेरी समझ में आ रहा है!
वैसे भी इन दिग्गजों के बीच में मेरा क्या काम!
ध्रुव तो न जाने कहां जा रहा था-
पर 'दिग्गजों' के बीच में लड़ाई जारी थी-
तेरी किरणों का मुझ पर कोई असर होने वाला नहीं है। और मेरी 'ऊष्मा शक्ति' का तुझ पर कोई असर नहीं हो रहा है!
इसीलिए मैं तुझे पीट-पीट कर ही हार मानने के लिए मजबूर कर दूंगी!

'प्रचंड' प्रतिरोध तो कर रहा था, लेकिन शक्ति के शक्तिशाली वार उसे एक बार फिर अपना रूप समेटने के लिए मजबूर कर रहे थे–
थोड़ी ही देर में शक्ति को इस लड़ाई के पहले चरण में सफलता मिल जाने वाली थी–
तड़ाक
लेकिन तभी– शक्ति के ज़ेहन में दो चीखें एक साथ गूंज उठीं–
HELP
मदद!
ओह! अमेरिका और चीन से दो स्त्रियां मदद के लिए एक साथ पुकार रही हैं! मुझे अपने दो प्रतिरूपों को उन स्थानों पर भेजना होगा।
लेकिन इन दो प्रतिरूपों के निकलने से मेरी शक्ति एक तिहाई रह जाएगी! क्योंकि बाकी दोनों प्रतिरूप अपनी एक तिहाई और एक तिहाई शक्ति अपने साथ ले जाएंगी!–
–और मेरी शक्ति कम होने से यह परछाई मेरे ऊपर हावी हो सकता है! पर मैं नियमों से विवश हूं! मुसीबतज़दा स्त्री की सहायता के लिए मुझे जाना ही होगा।
शक्ति के रूप से दो प्रतिरूप निकलकर अलग-अलग दिशा में विलीन हो गए–

और बाजी पलट गई–
घड़ंकड़ड़क
भाऽऽऽम
और अगर इस नतीजे को कोई पलट सकता था तो सिर्फ एक शख्स–
जो इस वक्त समुद्र की गहराइयों की खाक छान रहा था–
'प्रचंडा' को एक बार कैद किया जा चुका है, आदूबर विकारियों द्वारा! लेकिन नताशा के पास जो 'चर्म डायरी' थी, उसमें वे पन्ने नहीं थे, जिनमें शायद इस बात का जिक्र हो कि विकारियों ने प्रचंडा को कैद कैसे किया था!...
...और अगर वह 'चर्म डायरी' यहीं से तैरती हुई सागर की सतह तक गई है तो वे बाकी पन्ने भी यहीं कहीं होने चाहिए...
...आहा! ये रहे! ऊपर मिट्टी जम जाने के कारण पहचान में नहीं आ रहे थे।
ध्रुव जोड़-जोड़कर स्पेनिश भाषा में लिखी गई उस इबारत को पढ़ता गया! और धीरे-धीरे उसके दिमाग में स्थिति साफ होती चली गई–
आहा! समझ गया! अब अगर शक्ति मेरा साथ दे तो नताशा को भी बचाया जा सकता है, और 'प्रचंडा' को कैद भी किया जा सकता है!
पर इस समय ध्रुव को शक्ति की नहीं, बल्कि शक्ति को ध्रुव की जरूरत थी–

क्योंकि शक्ति, प्रचंडा के सामने धीरे-धीरे कमजोर पड़ती जा रही थी–
आह! अगर यह परग्रही मानव शरीर में निवास न कर रहा होता तो मैं अपनी 'हस्त-ऊष्मा' से इसको कब का गला चुकी होती।...
...पर अब ये मुझे... ओह!
शक्ति! इससे हार मत मानो! इसको दबोचने की कोशिश करो!
ध्रुव को वापस घटनास्थल पर देखकर शक्ति समझ गई कि इस बार वह बगैर किसी योजना के नहीं आया है–
उसने अपनी शक्ति बटोरकर प्रचंडा को एक मजबूत शिकंजे में जकड़ लिया–
और उसी पल ध्रुव ने डूबी शिप के मलबे से लाए 'कोन' को नताशा के शरीर से सटाकर–
उसकी तीन घुंडियों को बाहर खींच लिया–
और जैसे सिकुड़ी 'फोम' फैलने पर पानी सोख लेती है, वैसे ही कोन ने ऊर्जा रूपी प्रचंडा को खींचकर जज्ब करना शुरू कर दिया–
किर्रर्र्र्र

कुछ ही पलों बाद, परग्रही प्रचंडा फिर से कोन में कैद था। और नताशा मुक्त हो गई थी–
आऽऽह! मुझे क्या हुआ था, ध्रुव? मैं... मैं समुद्र के अन्दर से यहां कैसे आ गई?
अभी बताता हूं, नताशा। लेकिन पहले इस प्रचंडा को पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के पार पहुंचाना है! वर्ना यह फिर न जाने कौन सी मुसीबत खड़ी कर दे!
लेकिन इसको गुरुत्वाकर्षण शक्ति के पार पहुंचाओगे कैसे?
...वैसे अब मेरी बाकी शक्तियां भी वापस आकर मुझमें समा गई हैं। अब मैं वापस नहीं आऊंगी! लेकिन तुमसे मैंने यह जरूर सीखा है कि परिस्थिति समझने के बाद ही न्याय करना चाहिए!
मैं श्री हरिकोटा स्पेस लांचिंग सेंटर से संपर्क स्थापित करता हूं! अगर निकट भविष्य में कोई रॉकेट अंतरिक्ष में भेजा जा रहा हो तो उसके साथ इसे भी भेजा जा सकता है!
इसकी आवश्यकता नहीं है ध्रुव! मैं इसको अंतरिक्ष में खुद छोड़ आऊंगी। लेकिन जाने से पहले मैं यह जरूर कहना चाहती हूं कि मैंने तुमको गलत समझा।...
यह आश्चर्यजनक शक्तियों युक्त महिला कौन है ध्रुव? इसके मुख पर तो देवियों जैसा तेज है।
यह अपने आपको देवी का अंश ही बताती है, नताशा! और मुझे इसके दावे पर कोई सन्देह नहीं है।

और अब मैं उम्मीद करती हूं कि तुम मुझे गिरफ्तार करोगे!
गिरफ्तार? पर क्यों? तुमने फिलहाल कोई अपराध नहीं किया! लेकिन मैं अब भी चाहता हूं कि तुम अपराध का रास्ता छोड़कर वापस इस दुनिया में आ जाओ!
उधर प्रकाश की गति से उड़ती शक्ति ने अंतरिक्ष में पहुंच कर 'कीन' को नष्ट कर दिया, और प्रचंडा आज़ाद हो
फिलहाल यह संभव नहीं है ध्रुव! पहले मैं छल, कपट और भ्रष्टाचार से युक्त इस समाज को रहने लायक बनाऊंगी!...
...और फिर ही तुम्हारी दुनिया में वापस आ पाऊंगी!
अब मुझे भी शीघ्रातिशीघ्र वापस जाना चाहिए!...
...क्योंकि तरुण को चंदा पर शक नहीं होना चाहिए!
खैर, छोड़ो! अगर तुम मुझे कुछ बताना नहीं चाहती, तो मैं पूछूंगा नहीं...
...लेकिन यह याद रखो कि एक न एक दिन मैं यह बात जानकर ही रहूंगा कि तुमको अपना कौन सा रहस्य छिपाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है!
बहुत समय लगाया तुमने बाथरूम में चंदा!
वो... वो... मैं तरुण... मुझे–
फिलहाल तो चलो! तुम्हारे 'प्लास्टिक सर्जरी' के ऑपरेशन की तैयारी करनी है!

Vinod Yadav